हजारी प्रसाद द्विवेदी

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी: जीवन परिचय

प्रश्न 1 (आसान). हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का जन्म किस राज्य में हुआ था?
उत्तर – उत्तर प्रदेश

प्रश्न 2 (आसान). उन्हें 'पद्मभूषण' पुरस्कार किसने दिया था?
उत्तर – भारत सरकार

प्रश्न 3 (मध्यम). द्विवेदी जी ने किस पुस्तक के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त किया था?
उत्तर – आलोक पर्व

प्रश्न 4 (कठिन). शांति निकेतन में द्विवेदी जी को किन दो महान हस्तियों का सान्निध्य प्राप्त हुआ?
उत्तर – गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और आचार्य क्षितिमोहन सेन

» हजारी प्रसाद द्विवेदी: साहित्यिक परिचय

प्रश्न 5 (आसान). द्विवेदी जी को किन भाषाओं का ज्ञान था?
उत्तर – संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला।

प्रश्न 6 (आसान). वे किन मूल्यों के समन्वय में विश्वास करते थे?
उत्तर – परंपरा और आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों के समन्वय में।

प्रश्न 7 (मध्यम). द्विवेदी जी की रचनाओं में भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ कैसे दिखती है?
उत्तर – उनके इतिहास, दर्शन और धर्म के व्यापक ज्ञान के कारण, वे अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझते और प्रस्तुत करते थे।

प्रश्न 8 (कठिन). द्विवेदी जी के साहित्यिक परिचय से आपको क्या सीख मिलती है कि एक अच्छा लेखक या विचारक कैसा होना चाहिए?
उत्तर – हमें सीख मिलती है कि एक अच्छा लेखक या विचारक वही होता है जो सिर्फ़ एक विषय तक सीमित न रहे, बल्कि कई भाषाओं और विषयों का ज्ञान रखे। उसे अपनी जड़ों यानी परंपराओं से भी जुड़ा रहना चाहिए, लेकिन नए विचारों और आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों को भी अपनाना चाहिए ताकि उसकी बातें आज के समाज से भी जुड़ सकें।

» द्विवेदी जी की भाषा-शैली की विशेषताएँ

प्रश्न 9 (आसान). द्विवेदी जी की भाषा की एक सबसे बड़ी खासियत क्या थी?
उत्तर – उनकी भाषा सरल और प्रांजल थी।

प्रश्न 10 (आसान). उनकी शैली में लेखक का अपना अंदाज़ दिखने को क्या कहते हैं?
उत्तर – व्यक्तित्व-व्यंजकता।

प्रश्न 11 (मध्यम). द्विवेदी जी ने किस शैली का प्रयोग करके अपने निबंधों को बोझिल होने से बचाया?
उत्तर – व्यंग्य शैली का प्रयोग करके।

प्रश्न 12 (कठिन). 'आत्मपरकता' का क्या अर्थ है, द्विवेदी जी के संदर्भ में समझाएं?
उत्तर – आत्मपरकता का अर्थ है कि लेखक अपनी बात को अपने निजी दृष्टिकोण और अनुभवों के आधार पर प्रस्तुत करता है, जिससे पाठक को लेखक की सोच और भावनाएँ स्पष्ट रूप से समझ आती हैं।

» हजारी प्रसाद द्विवेदी की प्रमुख रचनाएँ

प्रश्न 13 (आसान). हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित किसी एक निबंध का नाम बताइए।
उत्तर – अशोक के फूल

प्रश्न 14 (आसान). हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित किसी एक उपन्यास का नाम बताइए।
उत्तर – बाणभट्ट की आत्मकथा

प्रश्न 15 (मध्यम). हजारी प्रसाद द्विवेदी के दो आलोचनात्मक ग्रंथों के नाम लिखिए।
उत्तर – सूर-साहित्य, कबीर

प्रश्न 16 (कठिन). निम्नलिखित में से कौन-सी रचना उपन्यास विधा की है: 'कुटज' या 'पुनर्नवा'?
उत्तर – पुनर्नवा

» 'कुटज' निबंध का परिचय

प्रश्न 17 (आसान). 'कुटज' शब्द से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – 'कुटज' हिमालय की ऊँची पहाड़ियों पर उगने वाला एक जंगली पौधा है।

प्रश्न 18 (आसान). कुटज की कौन सी विशेषताएँ लेखक को प्रभावित करती हैं?
उत्तर – उसकी अपराजेय जीवनशक्ति, स्वावलंबन और आत्मविश्वास, बिना किसी बाहरी सहारे के जीने की क्षमता।

प्रश्न 19 (मध्यम). लेखक ने कुटज में मानव के लिए क्या संदेश पाया है? दो मुख्य बातें बताइए।
उत्तर – लेखक ने कुटज में यह संदेश पाया है कि मनुष्य को विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं माननी चाहिए और आत्मविश्वास व स्वावलंबन के साथ शान से जीवन जीना चाहिए।

प्रश्न 20 (कठिन). आपको क्यों लगता है कि हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'कुटज' जैसे एक साधारण पौधे को अपने निबंध का विषय चुना होगा?
उत्तर – द्विवेदी जी ने 'कुटज' को इसलिए चुना क्योंकि वे दिखाना चाहते थे कि साधारण से साधारण वस्तु या प्राणी में भी असाधारण गुण हो सकते हैं। कुटज की विषम परिस्थितियों में भी जीने की क्षमता, उसका स्वावलंबन और आत्मविश्वास हमें प्रेरणा देता है कि बाहरी सुंदरता या सुविधा से ज़्यादा आंतरिक शक्ति मायने रखती है।

» शिवालिक की पहाड़ियाँ और कुटज का जीवन संघर्ष

प्रश्न 21 (आसान). शिवालिक की पहाड़ियों को लेखक ने कैसा बताया है?
उत्तर – शिवालिक की पहाड़ियों को लेखक ने 'सूखी नीरस' बताया है।

प्रश्न 22 (आसान). कुटज का पेड़ किस चीज़ से लदा हुआ दिखाई देता है?
उत्तर – कुटज का पेड़ फूलों से लदा हुआ दिखाई देता है।

प्रश्न 23 (मध्यम). लेखक कुटज को 'उजाड़ के साथी' क्यों कहते हैं?
उत्तर – लेखक कुटज को 'उजाड़ के साथी' इसलिए कहते हैं क्योंकि वह सूखी और नीरस पहाड़ियों पर भी अकेले खड़ा होकर जीवन का प्रतीक बनता है, मानो उसने उजाड़ को ही अपना साथी बना लिया हो।

प्रश्न 24 (कठिन). इस अंश के माध्यम से हजारी प्रसाद द्विवेदी जीवन के किस बड़े मूल्य को स्थापित करना चाहते हैं?
उत्तर – इस अंश के माध्यम से हजारी प्रसाद द्विवेदी जीवन के 'संघर्षशीलता' और 'अदम्य जीवटता' (यानी हार न मानने की भावना) के मूल्य को स्थापित करना चाहते हैं। वह सिखाते हैं कि बाहरी चुनौतियाँ कितनी भी क्यों न हों, हमें भीतर से मज़बूत रहकर अपने अस्तित्व को बनाए रखना चाहिए।

» रूप और नाम का महत्व: 'कुटज' के संदर्भ में

प्रश्न 25 (आसान). लेखक के अनुसार, 'रूप' क्या है?
उत्तर – व्यक्ति-सत्य

प्रश्न 26 (आसान). लेखक के अनुसार, 'नाम' क्या है?
उत्तर – समाज-सत्य

प्रश्न 27 (मध्यम). नाम बड़ा क्यों होता है? लेखक के विचार स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – लेखक के अनुसार, नाम इसलिए बड़ा होता है क्योंकि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। समाज जिस शब्द को पहचान देता है, उसे अपनी मुहर लगाता है, वही नाम बनता है और महत्वपूर्ण होता है।

प्रश्न 28 (कठिन). कुटज के नाम की उत्पत्ति के बारे में लेखक ने क्या संभावनाएँ व्यक्त की हैं?
उत्तर – लेखक 'कुटज' शब्द की उत्पत्ति 'कुट' से जोड़ते हैं, जिसका अर्थ घड़ा या घर हो सकता है। वह अगस्त्य मुनि का उदाहरण देते हैं जिन्हें 'कुटज' कहा जाता था। साथ ही, वे यह भी संभावना व्यक्त करते हैं कि यह शब्द आर्यभाषाओं का नहीं बल्कि 'आग्नेय भाषा-परिवार' का हो सकता है, जो संस्कृत में घुलमिल गया है।

» कुटज की अपराजेय जीवन-शक्ति

प्रश्न 29 (आसान). कुटज को 'अपराजेय' क्यों कहा गया है?
उत्तर – क्योंकि वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता और शान से जीता है।

प्रश्न 30 (आसान). कुटज हमें कौन-सा मानवीय गुण सिखाता है?
उत्तर – कुटज हमें जिजीविषा (जीने की प्रबल इच्छा) और स्वावलंबन का गुण सिखाता है।

प्रश्न 31 (मध्यम). हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कुटज के माध्यम से 'सामान्य से सामान्य वस्तु में भी विशेष गुण हो सकते हैं' यह बात कैसे सिद्ध की है?
उत्तर – उन्होंने कुटज जैसे एक साधारण, कम जाने-पहचाने पेड़ के अंदर की अद्भुत जीवन-शक्ति, स्वावलंबन और विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कुराते रहने के गुण को उजागर करके यह सिद्ध किया है।

प्रश्न 32 (कठिन). शिवालिक की पहाड़ियों का वर्णन कुटज की जीवन-शक्ति को दर्शाने में किस प्रकार सहायक है?
उत्तर – शिवालिक की पहाड़ियों का सूखा, बंजर, और नीरस वर्णन, जहाँ दूब भी नहीं उगती, कुटज की असाधारण सहनशक्ति और जिजीविषा को और अधिक उभारता है। यह दिखाता है कि कैसे इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कुटज न केवल जीवित रहता है, बल्कि फूलों से लदकर मुस्कुराता भी है, जो उसकी अपराजेय शक्ति का प्रमाण है।

» कालिदास और रहीम के प्रसंग में कुटज का महत्व

प्रश्न 33 (आसान). कालिदास ने किस महाकाव्य में कुटज का उल्लेख किया है?
उत्तर – मेघदूत

प्रश्न 34 (आसान). रहीम ने अपनी किस पंक्ति में कुटज का नाम लिया है?
उत्तर – वे रहीम अब बिरछ कहँ, जिनकर छाँह गंभीर। बागन बिच-बिच देखियत, सेंहुड़ कुटज करीर।।

प्रश्न 35 (मध्यम). कालिदास और रहीम के कुटज के प्रति दृष्टिकोण में क्या अंतर था?
उत्तर – कालिदास ने कुटज को अभाव में 'गाढ़े का साथी' माना, जबकि रहीम ने उसे सामान्य, कम महत्त्व वाला पेड़ कहा, जिसकी छाँव भी कम होती है।

प्रश्न 36 (कठिन). हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कालिदास के कुटज को 'बड़भागी' क्यों कहा है?
उत्तर – द्विवेदी जी ने कालिदास के कुटज को 'बड़भागी' इसलिए कहा क्योंकि अभाव की स्थिति में जब कोई और फूल नहीं मिला, तब कुटज ने ही कालिदास के यक्ष को मेघ की अभ्यर्थना के लिए सहारा दिया। यह बताता है कि कुटज जैसा साधारण फूल भी महान कवि के काम आ सका और उसके 'संतृप्त चित्त' को संतुष्टि दी।

» 'कुटज' शब्द की व्युत्पत्ति और भाषावैज्ञानिक संदर्भ

प्रश्न 37 (आसान). 'कुट' शब्द के दो मुख्य अर्थ क्या बताए गए हैं?
उत्तर – 'कुट' शब्द के दो मुख्य अर्थ 'घड़ा' और 'घर' बताए गए हैं।

प्रश्न 38 (आसान). अगस्त्य मुनि को 'कुटज' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – अगस्त्य मुनि को 'कुटज' 'घड़े से उत्पन्न होने' के कारण कहा जाता है, हालांकि लेखक इस पर सवाल उठाते हैं।

प्रश्न 39 (मध्यम). हजारी प्रसाद द्विवेदी 'कुटज' शब्द के आर्यभाषा से होने पर संदेह क्यों करते हैं?
उत्तर – वे संदेह इसलिए करते हैं क्योंकि संस्कृत में 'कुटज' के 'कुटज', 'कुटच', 'कूर्टज' जैसे कई रूप मिलते हैं, और वे मानते हैं कि फूलों और वृक्षों के कई शब्द आग्नेय भाषा-परिवार से आए हैं।

प्रश्न 40 (कठिन). सिल्वाँ लेवी ने संस्कृत भाषा के किन शब्दों का संबंध आग्नेय भाषा-परिवार से बताया है? इससे 'कुटज' के संदर्भ में क्या अनुमान लगाया जा सकता है?
उत्तर – सिल्वाँ लेवी ने संस्कृत में फूलों, वृक्षों और खेत-बागबानी के अधिकांश शब्दों का संबंध आग्नेय भाषा-परिवार से बताया है। इससे अनुमान लगाया जाता है कि 'कुटज' भी, जो एक पेड़ का नाम है, इसी आग्नेय भाषा-परिवार से आया हो सकता है।

» कुटज का जीवन-दर्शन: स्वार्थ से परे

प्रश्न 41 (आसान). याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी को क्या समझाने की कोशिश की?
उत्तर – उन्होंने समझाया कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है, पुत्र या पत्नी अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं।

प्रश्न 42 (आसान). लेखक के अनुसार, क्या दुनिया में सिर्फ़ प्रचंड स्वार्थ है?
उत्तर – नहीं, लेखक का अंतर्मन कहता है कि स्वार्थ से भी बड़ी कोई शक्ति ज़रूर है।

प्रश्न 43 (मध्यम). लेखक 'जिजीविषा' से भी प्रचंड किस शक्ति की बात करते हैं?
उत्तर – वे त्याग और परार्थ (दूसरों का भला करने) की शक्ति की बात करते हैं, जो स्वार्थ से परे है।

प्रश्न 44 (कठिन). कुटज का जीवन-दर्शन हमें स्वार्थ से परे सोचने के लिए कैसे प्रेरित करता है?
उत्तर – कुटज की जीने की अदम्य इच्छाशक्ति हमें सिखाती है कि हम सिर्फ़ अपने अस्तित्व के लिए नहीं जीते, बल्कि हमें त्याग और परोपकार के माध्यम से दूसरों के लिए भी कुछ करना चाहिए, यही उसके जीवन का गहरा दर्शन है।

» आत्मनः का व्यापक अर्थ और समष्टि-बुद्धि

प्रश्न 45 (आसान). लेखक 'आत्मनः' के किस अर्थ को बड़ा करना चाहते हैं?
उत्तर – व्यक्तिगत आत्मा के अर्थ को व्यापक बनाना, उसे सिर्फ़ व्यक्ति तक सीमित न रखना।

प्रश्न 46 (आसान). 'समष्टि-बुद्धि' का क्या अर्थ है?
उत्तर – अपने में सब और सब में आप की भावना, यानी पूरे समाज को अपना हिस्सा मानना।

प्रश्न 47 (मध्यम). लेखक के अनुसार, स्वार्थ खंड-सत्य क्यों है और वह क्या बढ़ाता है?
उत्तर – स्वार्थ खंड-सत्य है क्योंकि वह अधूरा है, पूरा सुख नहीं देता। यह मोह और तृष्णा को बढ़ाता है।

प्रश्न 48 (कठिन). क्या कुटज 'आत्मनः' के व्यापक अर्थ और 'समष्टि-बुद्धि' के अनुसार जीता है? अपने शब्दों में समझाइए।
उत्तर – हाँ, कुटज निश्चित रूप से 'आत्मनः' के व्यापक अर्थ के अनुसार जीता है। वह न किसी से कुछ माँगता है, न किसी को भयभीत करता है, न अपनी उन्नति के लिए चाटुकारिता करता है। वह बिना किसी स्वार्थ के जीता है, अपने आप में मस्त रहता है और दूसरों को प्रेरणा देता है। उसका यह अविचल और भयमुक्त स्वभाव 'स्वार्थ के दायरे से बाहर' की बात है, जो एक प्रकार की 'समष्टि-बुद्धि' को ही दर्शाता है - जहाँ व्यक्ति सिर्फ़ अपनी नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व के व्यापक उद्देश्य के लिए जीता है।

» कुटज का उपदेश: हृदय से अपराजित रहो

प्रश्न 49 (आसान). कुटज के अनुसार, हमें सुख और दुख को कैसे स्वीकार करना चाहिए?
उत्तर – समान भाव से, बिना विचलित हुए, हृदय से अपराजित रहकर।

प्रश्न 50 (आसान). 'हृदय से अपराजित' का क्या अर्थ है?
उत्तर – अपने मन को किसी भी परिस्थिति में हारने न देना, अंदर से मज़बूत रहना।

प्रश्न 51 (मध्यम). लेखक ने कुटज के इस उपदेश को किस महापुरुष की भाषा से जोड़ा है?
उत्तर – भीष्म पितामह की अवधूत भाषा से।

प्रश्न 52 (कठिन). आपकी ज़िंदगी में कोई ऐसा पल आया हो जब आपने 'हृदय से अपराजित' रहने की कोशिश की हो, उसे एक वाक्य में बताओ।
उत्तर – जब मेरी साइकिल पंचर हो गई और मैं पैदल घर तक आया, तो मैंने हिम्मत नहीं हारी।

» सुख और दुख: मन के विकल्प

प्रश्न 53 (आसान). जो व्यक्ति अपने मन पर नियंत्रण नहीं रख पाता, उसे लेखक ने कैसा बताया है?
उत्तर – दुखी।

प्रश्न 54 (आसान). सुख और दुख कहाँ से उत्पन्न होते हैं, लेखक के अनुसार?
उत्तर – मन से।

प्रश्न 55 (मध्यम). अपने शब्दों में बताइए कि 'मन के विकल्प' से लेखक का क्या तात्पर्य है?
उत्तर – इसका मतलब है कि सुख और दुख हमारी आंतरिक चुनाव या मन की स्थिति पर निर्भर करते हैं, हम ही चुनते हैं कि किसी परिस्थिति पर कैसे प्रतिक्रिया दें।

प्रश्न 56 (कठिन). अगर कोई व्यक्ति गरीबी में भी खुश रहता है और कोई अमीर होकर भी परेशान है, तो यह स्थिति लेखक के इस कथन को कैसे सिद्ध करती है?
उत्तर – यह सिद्ध करती है कि गरीबी या अमीरी जैसी बाहरी परिस्थितियाँ सीधे सुख या दुख का कारण नहीं होतीं। यदि गरीब व्यक्ति का मन शांत और संतुष्ट है (वश में है), तो वह सुखी है। वहीं, अमीर व्यक्ति का मन यदि लालच, चिंता या अशांति से भरा है (परवश है), तो वह दुखी है। यह मन की स्थिति है जो सुख-दुख निर्धारित करती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म स्थान क्या था और उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से कौन सी उपाधि प्राप्त की थी?

› सबसे पहले, उनके जन्म स्थान के बारे में सोचेंगे। हमने पढ़ा कि उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले में हुआ था।
› फिर, उनकी शिक्षा पर ध्यान देंगे। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उन्होंने ज्योतिष की पढ़ाई की थी।
› तो हम बता सकते हैं कि वे कहाँ पैदा हुए और उन्होंने क्या पढ़ाई की।

उत्तर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म गाँव आरत दुबे का छपरा, बलिया (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से 'ज्योतिषाचार्य' की उपाधि प्राप्त की थी।

उदाहरण 2. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के साहित्यिक परिचय की किन्हीं दो मुख्य विशेषताओं को समझाइए।

› पहला मुख्य बिंदु है उनका 'व्यापक अध्ययन क्षेत्र'। द्विवेदी जी ने सिर्फ़ हिंदी ही नहीं, बल्कि संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश जैसी प्राचीन भारतीय भाषाओं और बांग्ला जैसी आधुनिक भाषा का भी गहरा ज्ञान हासिल किया था।

› दूसरा मुख्य बिंदु है 'भारतीय संस्कृति की गहरी समझ और परंपरा व आधुनिक मूल्यों का समन्वय'। उनके पास इतिहास, दर्शन और धर्म का भी गहरा ज्ञान था, जिसकी वजह से उनकी रचनाओं में हमें भारत की पुरानी संस्कृति की झलक भी मिलती है और वे नए विचारों को भी अपनाते थे। वे पुरानी परंपराओं को नए समय के साथ जोड़कर देखते थे, जिससे उनकी बातें सबको समझ आती थीं।

उत्तर – द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र व्यापक था, जिसमें अनेक प्राचीन और आधुनिक भाषाओं का ज्ञान शामिल था। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की गहरी पैठ और परंपरा के साथ आधुनिक प्रगतिशील मूल्यों का समन्वय मिलता है।

उदाहरण 3. द्विवेदी जी की भाषा को 'सरल और प्रांजल' क्यों कहा गया है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा 'सरल' का क्या अर्थ है। सरल का अर्थ है आसान, जो समझने में कठिनाई न हो।

› दूसरा कदम: अब 'प्रांजल' शब्द पर ध्यान दें। प्रांजल का अर्थ है निर्मल, स्वच्छ, दोषरहित।

› तीसरा कदम: द्विवेदी जी की भाषा में ये दोनों गुण मौजूद हैं। उनके शब्द चयन ऐसे होते हैं जो आम बोलचाल के करीब हों और आसानी से समझ आ जाएँ।

› चौथा कदम: साथ ही, उनकी भाषा में अस्पष्टता या भारी-भरकम शब्दों का प्रयोग नहीं होता, जो उसे स्वच्छ और शुद्ध बनाता है।

उत्तर – द्विवेदी जी की भाषा को 'सरल और प्रांजल' इसलिए कहा गया है क्योंकि वह समझने में आसान, साफ़-सुथरी और स्पष्ट है, जिसमें अनावश्यक जटिलता नहीं होती।

उदाहरण 4. प्रश्न: हजारी प्रसाद द्विवेदी के किन्हीं दो निबंधों और दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

› पहला, निबंधों को याद करें। हमने कौन-कौन से निबंध पढ़े थे? अशोक के फूल और कुटज।

› दूसरा, उपन्यासों को याद करें। कौन से उपन्यास थे? बाणभट्ट की आत्मकथा और चारुचंद्रलेख।

› तो बस, आपको सही विधा में सही रचना का नाम लिखना है।

उत्तर – निबंध: अशोक के फूल, कुटज। उपन्यास: बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्रलेख।

उदाहरण 5. लेखक ने 'कुटज' पौधे में मानव के लिए क्या संदेश पाया है?

› पहले कुटज की विशेषताओं को समझो: वह कहाँ उगता है, कैसे हालातों में।

› निबंध के मूल विचार को पहचानो कि लेखक ने सामान्य चीज़ों में भी क्या देखा।

› कुटज की 'अपराजेय जीवनशक्ति', 'आत्मविश्वास' और 'स्वावलंबन' जैसे गुणों को पहचानो।

› इन्हीं गुणों को मानव जीवन से जोड़कर देखो कि ये हमें क्या सिखाते हैं।

› निष्कर्ष पर पहुँचो कि कुटज हमें विषम परिस्थितियों में भी शान से जीने और हार न मानने की प्रेरणा देता है।

उत्तर – लेखक ने कुटज में 'अपराजेय जीवनशक्ति' (जो कभी हार न माने), 'स्वावलंबन' (अपने ऊपर निर्भर रहना) और 'आत्मविश्वास' का संदेश पाया है। यह पौधा हमें सिखाता है कि सबसे कठिन परिस्थितियों में भी हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और शान से जीना चाहिए, जैसे कुटज पहाड़ियों पर बिना किसी की मदद के खड़ा रहता है।

उदाहरण 6. शिवालिक की पहाड़ियों का वर्णन करते हुए, लेखक कुटज के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं?

› सबसे पहले, शिवालिक पहाड़ियों की विशेषताओं पर ध्यान दें - 'सूखी नीरस', 'कठोर वातावरण'।

› फिर देखें कि इन मुश्किल परिस्थितियों में कुटज कैसे उगता है - 'मुस्कुराते हुए', 'फूलों से लदा'।

› अब, इन दोनों के contrast (विरोधाभास) को समझें। कठोरता के बावजूद कुटज का जीवन जीना।

› लेखक का संदेश यह है कि बाहरी परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, हमें भीतर से मज़बूत रहकर जीवन के संघर्षों का सामना करना चाहिए और अपनी जीवटता नहीं छोड़नी चाहिए।

उत्तर – लेखक कुटज के माध्यम से यह संदेश देना चाहते हैं कि विपरीत और कठिन परिस्थितियों में भी हमें अपने जीवन जीने की इच्छाशक्ति और स्वावलंबन को बनाए रखना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे कुटज सूखी और नीरस शिवालिक पहाड़ियों पर भी अडिग खड़ा रहता है।

उदाहरण 7. लेखक ने कुटज के संदर्भ में 'नाम' और 'रूप' के महत्व को कैसे समझाया है?

› लेखक पहले 'रूप' और 'नाम' के सवाल को उठाते हैं - कौन ज़्यादा महत्वपूर्ण है?

› वो कहते हैं कि 'रूप' व्यक्ति-सत्य है, यानी ये किसी चीज़ का अपना व्यक्तिगत गुण है कि वो कैसी दिखती है।

› लेकिन 'नाम' समाज-सत्य है। नाम तब बड़ा होता है जब उसे सामाजिक स्वीकृति, यानी 'सोशल सैंक्शन' मिलती है।

› कुटज का रूप है - कठोर परिस्थितियों में भी हरा-भरा, फूलों से लदा हुआ।

› उसका नाम 'कुटज' है, जिसे संस्कृत साहित्य में भले ही कवियों ने ज़्यादा महत्व न दिया हो, लेकिन यह नाम हज़ारों सालों से चला आ रहा है और इसी नाम से समाज उसे पहचानता है।

› लेखक बताते हैं कि 'कुटज' शब्द 'कुट' से आया है, जिसका अर्थ घड़ा या घर हो सकता है, और यह भी बताते हैं कि संस्कृत में कई शब्द 'आग्नेय भाषा-परिवार' से आए हैं।

› अंत में वो निष्कर्ष निकालते हैं कि कुटज नाम और रूप दोनों में अपनी अदम्य जीवनी शक्ति की घोषणा करता है।

उत्तर – लेखक ने समझाया है कि 'रूप' किसी वस्तु का व्यक्तिगत सत्य है, जबकि 'नाम' समाज का सत्य है। नाम को सामाजिक स्वीकृति मिलने से उसका महत्व बढ़ जाता है। कुटज का रूप उसकी कठोर जीवन शक्ति को दिखाता है, और उसका नाम 'कुटज' समाज में उसकी पहचान और शाश्वतता को दर्शाता है।

उदाहरण 8. कुटज किन विषम परिस्थितियों में भी अडिग रहता है?

› पाठ में वर्णित शिवालिक पहाड़ियों के वातावरण को समझो।

› लेखक ने कुटज के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया है, उन पर ध्यान दो।

› देखो, जहाँ दूब तक सूख जाती है, काली चट्टानें और लाल रेती ही दिखती है, रस कहीं नहीं है, वहाँ कुटज कैसे जी रहा है।

› गर्मी की भयंकर मार और भूख-प्यास की निरंतर चोट सहकर भी कुटज खड़ा है और मुस्कुरा रहा है।

उत्तर – कुटज शिवालिक की सूखी, नीरस पहाड़ियों पर, जहाँ दूब तक सूख जाती है, भयंकर गर्मी और भूख-प्यास की निरंतर चोट सहकर भी अडिग खड़ा रहता है, फूल देता है और मुस्कुराता है।

उदाहरण 9. बताइए, कालिदास ने किस परिस्थिति में कुटज पुष्पों का उपयोग किया और इससे कुटज का कौन-सा गुण उजागर होता है?

› कालिदास ने यक्ष को मेघ की अभ्यर्थना (पूजा) के लिए रामगिरि पर्वत पर कुटज पुष्प दिए।

› यह 'आषाढ़स्य प्रथम-दिवसे' की बात है, जब शायद और कोई सुंदर फूल उपलब्ध नहीं था।

› इस परिस्थिति में, कुटज ने कालिदास के 'संतृप्त चित्त' को सहारा दिया।

› इससे कुटज का 'गाढ़े का साथी' होने का गुण उजागर होता है, यानी मुश्किल समय में साथ देने वाला।

उत्तर – कालिदास ने रामगिरि पर्वत पर यक्ष द्वारा मेघ की अभ्यर्थना के लिए कुटज पुष्पों का प्रयोग किया, क्योंकि उस समय शायद और कोई फूल उपलब्ध नहीं था। इससे कुटज का 'गाढ़े का साथी' और अभाव में भी महत्वपूर्ण होने का गुण उजागर होता है।

उदाहरण 10. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'कुटज' शब्द को लेकर किन मुख्य शंकाओं को उठाते हैं और उनका संबंध किस भाषा-परिवार से जोड़ते हैं?

› सबसे पहले, द्विवेदी जी बताते हैं कि 'कुटज' का अर्थ है 'जो कुट से पैदा हुआ हो'। 'कुट' का अर्थ घड़ा या घर दोनों हो सकता है।

› फिर वे सवाल उठाते हैं कि क्या अगस्त्य मुनि सच में घड़े से पैदा हुए थे, या कुटज का फूल घड़े में उगता है? यह बात उन्हें तर्कसंगत नहीं लगती।

› उनकी सबसे बड़ी शंका यह है कि क्या 'कुटज' शब्द आर्यभाषाओं का ही है? उन्हें इसमें संदेह होता है क्योंकि संस्कृत में इसके कई रूप मिलते हैं (कुटज, कुटच, कूर्टज)।

› अंत में, वे प्रसिद्ध भाषाशास्त्री सिल्वाँ लेवी का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि संस्कृत में पेड़-पौधों, फूलों और बागबानी के अधिकांश शब्द आग्नेय भाषा-परिवार के हैं। वे संकेत देते हैं कि 'कुटज' भी उसी परिवार से हो सकता है।

› वह आग्नेय भाषा-परिवार (जिसे ऑस्ट्रो-एशियाटिक या कोल-परिवार भी कहते हैं) भारत के संथाल, मुंडा जैसी जातियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं से जुड़ा है, और संस्कृत ने इससे कई शब्द लिए हैं।

› इस प्रकार, वे शब्द की आर्यभाषा में कुलीनता पर सवाल उठाते हुए उसे आग्नेय भाषा-परिवार से संबंधित बताते हैं।

उत्तर – द्विवेदी जी 'कुटज' शब्द की आर्यभाषाओं में उत्पत्ति पर शंका उठाते हैं और उसे आग्नेय भाषा-परिवार से संबंधित मानते हैं, क्योंकि उन्हें 'कुट' का अर्थ (घड़ा/घर) और शब्द के कई रूप इसकी आर्य उत्पत्ति पर संदेह पैदा करते हैं।

उदाहरण 11. लेखक के अनुसार, 'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति' का क्या अर्थ है और वे इस विचार पर क्या टिप्पणी करते हैं?

› सबसे पहले, 'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति' का अर्थ समझना है: यह याज्ञवल्क्य ऋषि का कथन है जिसका अर्थ है कि 'हर चीज़ हमें अपने लिए ही प्यारी होती है', यानी सभी रिश्ते और प्रेम का मूल कारण अपना स्वार्थ होता है।

› फिर, लेखक की टिप्पणी को समझना: आचार्य द्विवेदी इस विचार को 'विचित्र तर्क' मानते हैं। वे सवाल उठाते हैं कि अगर ऐसा है, तो दुनिया में त्याग, प्रेम और परोपकार जैसी बातें क्या सिर्फ़ दिखावा हैं?

› लेखक का निष्कर्ष है कि उनके अंतर्मन से आवाज़ आती है कि स्वार्थ से भी बड़ी कोई शक्ति ज़रूर है, और केवल

जीने की इच्छा ही सब कुछ नहीं है, बल्कि त्याग और परोपकार भी जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं।

उत्तर – लेखक के अनुसार 'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति' का अर्थ है कि हर चीज़ अपने स्वार्थ के लिए ही प्रिय होती है। इसपर लेखक टिप्पणी करते हैं कि यह तर्क 'विचित्र' है क्योंकि यह दुनिया में त्याग, प्रेम और परोपकार के अस्तित्व पर सवाल उठाता है। लेखक का मानना है कि स्वार्थ से परे भी त्याग और परोपकार की शक्ति होती है।

उदाहरण 12. लेखक के अनुसार, 'आत्मनः' का सच्चा आनंद कब मिलता है?

› पहले हम 'आत्मनः' के सामान्य अर्थ को समझेंगे, जो 'व्यक्तिगत आत्मा' है।

› फिर हम लेखक द्वारा दिए गए 'आत्मनः' के व्यापक अर्थ पर ध्यान देंगे, जो 'समष्टि-बुद्धि' से जुड़ा है।

› लेखक स्पष्ट करते हैं कि सच्चा आनंद तभी मिलता है जब हम सिर्फ़ अपनी नहीं, बल्कि 'सब' की भलाई के लिए, पूरे समाज के लिए जीते हैं।

› वे कहते हैं कि 'अपने में सब और सब में आप' की भावना ही पूर्ण सुख देती है।

उत्तर – लेखक के अनुसार, 'आत्मनः' का सच्चा आनंद तब मिलता है जब व्यक्ति अपनी आत्मा को केवल स्वयं तक सीमित न रखकर, 'समष्टि-बुद्धि' को अपनाता है – यानी जब वह अपने को 'सब' में और 'सब' को अपने में देखता है, और परोपकार के लिए स्वयं को समर्पित कर देता है।

उदाहरण 13. एक छात्र को बोर्ड परीक्षा में कम अंक मिलते हैं। कुटज के उपदेश के अनुसार उसे क्या करना चाहिए?

› पहला कदम: उसे कम अंकों से निराश नहीं होना चाहिए, न ही हार माननी चाहिए।

› दूसरा कदम: अपने मन को शांत रखना चाहिए, 'हृदय से अपराजित' रहना चाहिए।

› तीसरा कदम: अपनी गलतियों से सीखना चाहिए, यह स्वीकार करना चाहिए कि यह एक अनुभव था।

› चौथा कदम: पूरी दृढ़ता और नए उत्साह के साथ अगली बार और मेहनत करने का संकल्प लेना चाहिए।

उत्तर – छात्र को निराश हुए बिना, अपनी गलतियों से सीखकर, दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने की योजना बनानी चाहिए।

उदाहरण 14. कुटज के संदर्भ में, 'सुख और दुख मन के विकल्प हैं' इस कथन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

› पहले यह समझना है कि लेखक का कहना है कि सुख और दुख बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि हमारे मन की अवस्था से पैदा होते हैं।

› दूसरा, यदि हमारा मन हमारे नियंत्रण में है (वश में है), तो हम उन परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया करने का तरीका चुन सकते हैं।

› तीसरा, कुटज के पौधे को देखिए, वह भयंकर गर्मी में, पथरीली ज़मीन पर भी मज़बूती से खड़ा रहता है। उसकी बाहरी परिस्थितियाँ बेहद कठिन हैं, पर उसका मन हार नहीं मानता, वह अडिग रहता है।

› तो, कुटज बाहरी दुखद परिस्थितियों में भी अपने मन को वश में रखकर 'सुखी' है क्योंकि उसने उन मुश्किलों को स्वीकार कर लिया और उनसे लड़ने का चुनाव किया, हारने का नहीं।

उत्तर – कुटज की तरह, जो अपने मन को वश में रखता है और विपरीत परिस्थितियों में भी अडिग रहता है, वही सच्चा सुखी है क्योंकि सुख-दुख हमारे मन की प्रतिक्रिया पर निर्भर करते हैं, न कि सिर्फ बाहरी घटनाओं पर।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उनके जन्म स्थान, मुख्य पदवियाँ और 'आलोक पर्व' के लिए मिला साहित्य अकादमी पुरस्कार, ये तीनों बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत ज़रूरी हैं, इन्हें अच्छे से याद कर लेना।

• यह प्रश्न 'द्विवेदी जी के साहित्यिक परिचय की विशेषताएं बताइए' के रूप में बोर्ड परीक्षा में अक्सर आता है, तो उनके व्यापक अध्ययन और समन्वय के विचार पर खास ध्यान देना।

• यह प्रश्न अक्सर 3-4 अंक में आता है। सभी विशेषताओं को सही नाम के साथ याद रखना और एक-एक लाइन में उनका मतलब लिखना बहुत ज़रूरी है।

• उनकी रचनाओं के नाम और वे किस साहित्यिक विधा से संबंधित हैं, यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। ध्यान से याद करके जाना।

• इस भाग से अक्सर प्रतीकात्मक प्रश्न आते हैं, जैसे 'कुटज किसका प्रतीक है?' या 'शिवालिक की पहाड़ियों का वर्णन क्या दर्शाता है?' ऐसे में आपको सिर्फ शाब्दिक अर्थ नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपा हुआ गहरा संदेश लिखना है।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'रूप और नाम के महत्व' पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं, खासकर कुटज के संदर्भ में लेखक के विचारों को समझाना आता है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कुटज के गुणों को मानव जीवन से जोड़कर व्याख्या करने वाले प्रश्न अक्सर आते हैं।

• इस भाग से 'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति' के संदर्भ में लेखक के विचारों और 'स्वार्थ से परे' जीवन-दर्शन पर आधारित प्रश्न आ सकते हैं।

• यह अवधारणा अक्सर व्याख्या वाले प्रश्नों में पूछी जाती है, जहाँ 'हृदयेनापराजितः' या 'अवधूत की भाषा' को विस्तार से समझाना होता है।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर आधारित प्रश्न आते हैं कि 'कुटज पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि सुख और दुख मन के विकल्प हैं'। इसे अच्छे से समझकर जाना।

एक नज़र में रिवीज़न

› द्विवेदी जी का जन्म बलिया, ज्योतिषाचार्य, शांति निकेतन, पद्मभूषण, साहित्य अकादमी 'आलोक पर्व'।
› व्यापक अध्ययन, भारतीय संस्कृति ज्ञान, परंपरा-आधुनिकता समन्वय।
› द्विवेदी जी की भाषा: सरल-प्रांजल, व्यक्तित्व-व्यंजकता, आत्मपरकता, व्यंग्य शैली।
› द्विवेदी जी के निबंध, उपन्यास, आलोचनात्मक ग्रंथ और उनके उदाहरण याद रखें।
› कुटज: शिवालिक की कठोरता में जीवन का प्रतीक, संघर्ष और जीवटता।
› रूप व्यक्ति-सत्य, नाम समाज-सत्य; सामाजिक स्वीकृति नाम का महत्व बढ़ाती है।
› कुटज: विषम परिस्थितियों में अडिग, स्वावलंबी, मानवीय जिजीविषा का प्रतीक।
› कुटज का जीवन: स्वार्थ से परे त्याग और परार्थ की शक्ति।
› कुटज: सुख-दुख में हृदय से अपराजित रहो, भीष्म पितामह की तरह।
› सुख-दुख मन के विकल्प; मन वश में = सुखी, मन परवश = दुखी।